तृतीय अध्याय :

" पृथ्वीराज " नाटक "

प्रस्तावना :

डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" का " पृथ्वीराज " ऐतिहासिक नाटक है। स्वयं लेखक ने नाटक की भूमिका में लिखा है – " पृथ्वीराज एक शुध्द ऐतिहासिक नाटक है। मैनें इसकी रचना करते समय अपनी सुविधा असुविधा की चिन्ता न करके ऐतिहासिक सत्यों की रक्षा करने का प्रयत्न किया है। "[१]

" पृथ्वीराज " नाटक राजस्थान के मध्यकालीन इतिहाससे सम्बंधित है। स्वर्गीय महाराणा कुम्भा का पुत्र रायमल पितृहत्या करके महाराणा बने बडे भाई उदयसिंह को राजगद्दी से हठाकर स्वयं महाराणा बना है (सं. १५३०) महाराणा रायमल के काल की राजनैतिक परिस्थिति का विवेचन इस नाटकमें है।

पृथ्वीराज नाटक की कथा :

पृथ्वीराज नाटक तीन अंकों मे विभाजित जिनमें क्रमश: पांच , सात और पांच दृश्य है। कुल सत्रह दृश्यों मे विभाजित इस नाटक का कथानक इस प्रकार है –

नाटक का प्रारंभ बदनौर के निकट अरावली पर्वत की उपत्यका में प्रभात के समय होता है। प्रभात का एकांत वातावरण और हरीभरी उपत्यका में टोकटोंडा के राव सुरताण की बेटी तारा वीणा बजा रही है। उसके पास धनुष्य बाण और भाला भी है। सूरज की बालकिरणों में तारा का वीर रूप चमक रहा है। तारा वीणा के स्वरों में खो जाती है और गीत गाने लगती है गीत में वह प्रभात का प्राकृतिक सौन्दर्य और अपने मन की भावना को व्यक्त करती है। गीत के समाप्त

---

१) पृथ्वीराज – भूमिका पृ. ५,

8673
A

होते ही सूरजमल वहाँ आता है। वह तारा के रूप को देख उसपर मुग्ध होता है। तारा के रूप की प्रशंशा करता है, जिससे तारा क्रोधित हो जाती है सूरजमल का परिचय पाकर तारा उसे " पितृघाती पिता की सन्तान " तथा "क्षत्रियत्वहीन व्यक्ति " कहकर अपमानित करके चली जाती है। सूरजमल तारा की प्राप्ति करने की सोचने लगता है , तभी उसका साथी सारंगदेव आता है। वह सूरजमल को तारा की प्राप्ति के लिए खोये हुए अधिकार वापस लेने की सलाह देता है। सूरजमल इसके लिए एक षड्यंत्र रचता है। महाराणा रायमल के तीनों पुत्रों- संग्रामसिंह , पृथ्वीराज और जयमल , में उत्तराधिकार के प्रश्न पर झगडा लगाकर उसका लाभ उठाकर स्वयं महाराणा बने।महामंत्री बनने की अभिलाषा से सारंगदेव उसकी सहायता करता है।

द्वितीय दृश्यमें चितौड के राजप्रासाद मे महाराणा रायमल विश्रामकक्ष में अकेले घूमते हुए सोच रहे है। राजा और प्रजा का सम्बन्ध जैसा होना चाहिए आज वह विपरीत है। अपने राज्य की स्थिति से वे बडे चिन्तित है। मण्डलाधीश और जागीरदार स्वातंत्र्य होकर विलासमय जीवन बिताना चाहते है। मीन जाति के लोगो ने निर्भय होकर दस्यु वृत्ति अपना ही है। मालवा का सुलतान सदा मेवाड को हडपने का यत्न कर रहा है। सुरताण को मेवाड में शरण देने के कारण टोडा का लिला अफगान मेवाडपर रूष्ट है। सूरजमल और सारंगदेव भी संकट खडे कर रहे है। महाराणा रायमल मंत्री को इन सारे संकटों को दूर करने के लिए कोई स्थायी व्यवस्था बनाने का आदेश देते है।

तृतीय दृश्यमें चित्तोड दुर्ग के पार्श्वभागमें पृथ्वीराज घुम रहा है। वह महाराणा रायमल पर असंतुष्ट है , क्योंकि महाराणा रायमल शत्रु के प्रति कोई ठोस कदम न उठाते है , न उन्हें युवराज बनाकर शत्रुसंहार का कार्य सौपते हैं। पृथ्वीराज की इस असंतुष्टता का साथ जयमल भी देता है। वे दोनों परम्परागत उत्तरधिकार के नियम को तोडना चाहते हैं। सूरजमल इसका लाभ उठाने का प्रयत्न करता है,

तभी संग्रामसिंह के आने से द्वंद्व की स्थिति निर्माण होती है। सूरजमल इन तीनों भाइयों को अपने षड्यंत्र की ओर ले जाता है।

चतुर्थ दृश्यमें सूरजमल का षड्यंत्र सफलता की ओर बढता है। उनके षड्यंत्र के अनुसम नाहरा मुहरा की चारणी देवी के मंदिर मे संग्रामसिंह और पृथ्वीराज में द्वंद्व युध्द होता है। संग्रामसिंह की एक आँख फुट जाती है। वह वहाँ से प्राण बचाकर भागता है बचने के लिए शिवान्तिनगर मे वीदा राजपूत के पास आता है। जयमल पीछा करते वहाँ आ जाता है। मेवाड के गृहकलह में जयमल द्वारा वीदा राजपूत की हत्या होती है। संग्रामसिंह वहाँ से भी भाग जाता है, जयमल उसका पीछा करता है ये सारी घटनाएँ शिवान्तिनगर में लगे मेले के अवसरपर एक घबराये युवक द्वारा बताई है।

पंचम दृश्यमें जयमल संग्रामसिंह का पीछा करते करते बदनौर के निकट जंगल में आता है। जहाँ राव सुरताण अपने भाग्यपर चिन्तित होकर बैठे है। तारा शेर का शिकार करके आती है, तो उसका साहस देख सुरताण अपनी दबी हुयी भावनाकों टोडा प्रदेश का स्वतंत्र करने की, बता देता है। तारा उसे पूरा करने का साहस व्यक्त करती है, तभी वहाँ जयमल आता है। तारा के सम सौन्दर्य देख उसके प्रति आकर्षित होता है। जयमल सुरताण के पास तारा के विवाह का प्रस्ताव रखता है। तारा उस समय प्रतिज्ञा करती है, कि जो वीर टोडा को यवनों से स्वतंत्र करा देगा, उसके साथ ही वह विवाह करेगी। जयमल उसे पूरा करने का वचन देकर चला जाता है।

द्वितीय अंक के प्रथम दृश्य में सूरजमल और सारंगदेव अपना षडयंत्र आगे बढाने की योजना बनाते है।सारंगदेव आते ही सूरजमल को अपने षड्यंत्र की सफलता मालूम होती है। " वीदा राजपूत की हत्या करके जयमल संग्रामसिंह का पीछा करता बदनौर में तारा के पास आता है। सुरताण के सामने तारा के साथ

विवाह करने का प्रस्ताव रखता है, तारा प्रतिज्ञा करती है, जयमल उसे पूरा करने का वचन देता है, लेकिन उसे पूरा किये बिना ही तारा को अपनी प्रियतमा समझकर अनैतिक व्यवहार करता है, जिससे राव सुरताण क्रोधित होकर जयमल की हत्या करते हैं। "इस एक सफलता पर सूरजमल और सारंगदेव दूसरी योजना बनाते हैं। महाराणा रायमल को पृथ्वीराज की उद्दण्डता बताकर उस दण्ड दिलाने और जयमल की हत्या करनेवाले राव सुरताण पर आक्रमण करने कहना तथा उसी समय मालवाधिपति मुजफ्फर का मेवाडपर आक्रमण करना और मेवाड की सत्ता हस्तगत करना।

द्वितीय दृश्यमें चित्तौड के राजदरबारमें महाराणा रायमल और सारे दरबारी बैठे हैं। सामने नृत्य चल रहा है। नृत्य के समाप्त होते ही महाराणा रायमल नृत्यकला की प्रशंसा करते है। नर्तकी के जानेपर मंत्री उत्तराधिकार के प्रश्न पर चल रहे भाई भाई के झगडे को बता देते हैं। महाराणा झगडे का कारण पृथ्वीराज को मानते हैं। तभी सूरजमल आकर पृथ्वीराज की उद्दण्डता बता देता है। उसी समय तारा की ओरसे सूचना आ जाती है, कि राव सुरताण द्वारा जयमल की हत्या हो गयी है। रायमल निराश होते है। सेनापति और मंत्री क्रोधित होकर सुरताणपर हमला करने के विचार व्यक्त करते है। महाराणा रायमल जयमल की हत्या को उचित मानते हैं। सूरजमल सुरताण को बंदी बनाने की राय देता है पर महाराणा उसे नहीं मानते। पृथ्वीराज को समझाने के लिए बुलाते हैं, सूरजमल जाते जाते पृथ्वीराज को मेवाड से निर्वासित करने की सलाह देकर चला जाता है। महाराणा के पास पृथ्वीराज निर्भीकता से आपने विचार व्यक्त करता है। महाराणा रायमल पृथ्वीराज की उद्दण्डता देखकर उसे मेवाड की सीमा से निर्वासित करते हैं।

तृतीय दृश्यमें राव सुरताण की पुत्री तारा का मन अशांत हुआ है। जब से उसने पृथ्वीराज के निर्वासन का समाचार सुनी है, तबसे वह प्रतिज्ञा के प्रति आशंकित हो उठी है। जयमल की हत्या हुई, संग्रामसिंह डर से अज्ञातवास मे चला गया, सूरजमल से वह घृणा करती है, रायमल तो बूढे है, तारा अपने प्रतिज्ञा पूर्ती की आशा पृथ्वीराज पर लगा कर बैठी थी, लेकिन उसे भी देश से निकाला गया, यही तारा की अशांति का कारण है। उसी समय राव सुरताण आनंद का समाचार बताते है, कि रायमल ने तारा के चरित्रपर प्रसन्न होकर बदनौर का जनपद उन्हें भेट दिया है। तारा के मनमें नयी आशा की किरण उत्पन्न होती है। वह अपनी सेना संगठन तथा पृथ्वीराज की खोजमें लग जाती है।

चतुर्थ दृश्यमें गोढार के पर्वतीय क्षेत्रमें पृथ्वीराज अपने पांच सैनिको के साथ जा रहा है। पृथ्वीराज के मनमे कुछ दिन वही रहकर गोढार को जीतने के विचार आते है। तभी एक दस्यु दल का हमला उनपर होता है, उसका नायक सूरजमल ही था। राज्यसत्ता की लालसा से सूरजमल ने पृथ्वीराज पर यह प्राणघातक हमला किया था। पृथ्वीराज उस हमले में बचता है, सूरजमल ही पकडा जाता है लेकिन पृथ्वीराज उसे क्षमा करके छोड देता है।

पंचम दृश्यमे अजमेर के निकट जंगलमें डाकू वेशमें संग्रामसिंह एक वृक्ष के नीचे सोये है। उसके सिरपर एक काला सर्प फना निकालकर खडा है, ऊपर वृक्षपर देवी पंछी बोल रहा है। अज पालक मारू यह दृश्य देखकर भयभीत होता है। करमचन्द परमार वहाँ आते है, सांगा उन्ही के दलमें काम कर रहा था। मारू शकुन ज्ञाता था, वह बताता है, कि यह राजा बननेवाला है। वे सर्प को हटाकर सांगा की असलियत जानने की कोशिश करते हैं। सांगा पहले सत्य छिपाने का प्रयत्न करता है, पर बादमें सत्य बताता है, कि व्यर्थ ही उसने उत्तरधिकार के प्रश्नपर झगडा किया है। पश्चात्ताप के लिए उसने दस्यु वृत्तिको स्वीकारा है। रहस्य मालूम होनपर करमचंद परमार अपनी बेटी का विवाह संग्रामसिंह से करा देता है।

षष्ठ दृश्यमें पृथ्वीराज नादोलमें ओझा व्यापारी के पास सहायता के लिये आता है। अंगूठी गिरवी रखकर कुछ मुद्रा लेना चाहता है। लेकिन अंगूठी के कारण ओझा तारा की कहानी उसे बताता है। पृथ्वीराज का परिचय उसे मिलता है। पृथ्वीराज के मनमे तारा के प्रति स्नेह की भावना उत्पन्न होती है। ओझा पृथ्वीराज को सहायता देने का वचन देता है और पृथ्वीराज भी ओझा को अपना विश्वासपात्र मानकर उद्देश्य बता देता है। ओझा की सहायता से नादोल में एक सेना संगठित करने का कार्य पृथ्वीराज शुरू करता है।

सप्तम दृश्यमे महाराणा रायमल चिन्तित अवस्थामे अपने भाग्यपर सोच रहे है। तभी मंत्री आकर यह बता देता है, कि सूरजमल और सारंगदेव दोनो मिलकर दक्षिणी परगनों को हडपने की कोशिश कर रहे हैं और मालवा के मुजफ्फर उनकी सहायता कर रहे हैं। सूरजमल का षड्यंत्र महाराणा को मालूम होता है। वे मंत्रीजी को सूरजमल को पकडने का षडयंत्र रचने का आदेश देते है, तभी तारा का सेवक आकर एक पत्र देता है। उसमें तारा ने यह सूचना दी थी, कि सूरजमल द्वारा सुरताण को धमकियाँ मिल रही है और पृथ्वीराज को क्षमा करके मेवाड वापस बुलाया जाय। महाराणा रायमल सूरजमल के कृत्यों पर क्रोधित होते है।

तृतीय अंक के प्रथम दृश्य में नदालयनगर में सभी "अहेरिया" उत्सव का आनन्द ले रहे हैं। एक पगडण्डीपर तीन नागरिकों की चर्चा से"अहरिया" उत्सव की तथा पृथ्वीराज द्वारा मीन नरेश पर आक्रमण करने की घटना मालूम होती है। मीन नरेश डरकर भागता है , लेकिन पृथ्वीराज उसे पकडकर सैनिकों को आज्ञा देता है , कि पेडसे बांध कर उसे मार डालो। नदालय के समस्त मीन दस्यू भाग जाते है। निर्वासित अवस्था मे भी अत्याचारी मीन नरेश रावत को मारकर पृथ्वीराज गोद्वार को दस्युओं से मुक्त करके वहाँ मेवाड का शासन स्थापित करता है।

द्वितीय दृश्यमें चित्तौड के महाराणा रायमल के दरबारमें गोद्धार मे हुयी घटना तथा पृथ्वीराज की वीरता की चर्चा मंत्री, सेनापति तथा दरबारी लोगों मे होती है। महाराणा रायमल पृथ्वीराज की वीरता तथा उदारता सुनकर उनका अपराध क्षमा करते है और उन्हे वापस चित्तौड बुलाते है। उसके स्वागत की तैयारी करने की सूचना भीं नगरवासियों को देते है।

तृतीय दृश्यमें बदनौर के निकट अरावली की एक उपत्यका में प्रभात के समय तारा वीणा बजाती हुई गीत गा रही है। उसकी सखी कला गीत और वीणा के प्रभाव की चर्चा करती है। तारा का मन पृथ्वीराज के प्रति आकर्षित हुआ है। पृथ्वीराज के मनमें तो तारा का आकर्षण ओझा द्वारा अंगूठी की कथा सुनकर ही हुआ है। इसीलिए पृथ्वीराज गोद्धार को मुक्त करते ही राव सुरताण के टोडा को मुक्त करने बदनौर पहुँचता है। वह तारा को लेकर टोडा को मुक्त करने और तारा की प्रतिज्ञा पूर्ण करने लीला अफगान पर आक्रमण करने जाता है।

चतुर्थ दृश्यमें नीमच के पहाडी इलाके में सूरजमल अपने आपको महाराजा घोषित करता है। सारंगदेव वहाँ आता है। पृथ्वीराज टोडा में उलझा देख कर वे दोनों मुजफ्फर की सहायता से चित्तौडपर आक्रमण करते हैं और पृथ्वीराज के टोडा से वापस आने के पहले चित्तौड को जीतने की कोशिश करते हैं।

पंचम दृश्यमें चित्तौड के निकट नदी किनारेपर राजपूत सेना का शिबिर है। दो सैनिक और प्रहरी के बातो से युध्द की स्थिति स्पष्ट हो जाती है। महाराणा रायमल क्रोधित होकर युध्दभूमिपर शत्रु की सेनामें जाकर वीरता से लढते हैं। अचानक पृथ्वीराज टोडा को मुक्त करके एक हजार सैनिकों को लेकर चित्तौड की युध्दभूमि में अत्यंत निर्णायक क्षण में आ जाता है। सूरजमल , सारंगदेव तथा मुजफ्फर जान बचाकर भागते हैं। राव सुरताण और तारा उनका पीछा करते है। अन्तमें महाराणा रायमल पृथ्वी. राज की वीरतापर अत्यंत आनंदित होते है।

उसी समय तारा और सुरताण वापस आते हैं। पृथ्वीराज और तारा का विवाह होता है। सभी मिलकर विजय का गीत गाते हैं। गीत के साथ यही नाटक की कथा समाप्त होती है।

.....